जो कोयला आता है वह चूंकि ब्लैक में बिकता है इस वास्ते ईंटों का भाव ढाई सौ प्रति हजार हो गया है जब कि उसके आप पिछली सरकार के समय में 140 रुपये प्रति हजार थे। कोयले की कमी और उसकी ब्लैक की वजह से जनता सरकार के प्रति लोगों की निराशा बहुत बढ़ गई है। मैं जानना चाहता हूं कि वह जो वैगनों पर ब्लैक किया जाता है और कोयला ब्लैक में बिकता है इसको रोकने के लिए आप क्या कर रहे हैं?

श्री जनेश्वर मिश्र : हालांकि कोयला काला होता है, लेकिन उसे ब्लैक में नहीं बिकना चाहिये, यह सरकार की निश्चित राय है, फिर भी अगर कोयला ब्लैक में बिकता है तो यह राज्य सरकारों का विषय है। (व्यवधान)

एक माननीय सदस्य : यह विषय राज्य सरकार का बिल्कुल नहीं है।

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: I have sympathy individually for the hon Minister. But the reality of the situation is that the hon. Minister has expressed nothing but complacency. I do not know what happens to the big industry, but thousands of small units are literally dying. They are incurring heavy losses because of shortage of coal and the entire arrangement of distribution of coal is so bad that the Energy Ministry is throwing the responsibility on the Railways and the Railways are throwing the responsibility on the coal industry I would like to know whether the hon. Minister will look into the heavy losses suffered by thousands of small units and will he be prepared to take responsibility to supply coal on priority basis to the small-scale units throughout the country

श्री जनेश्वर मिश्र : यह सही है कि इस समय कोयला उद्योग को लगभग 800 वैगन प्रतिदिन कम मिली है और इससे थोड़ी-बहुत परेशानी जरूर होगी, लेकिन एनर्जी मिनिस्ट्री में लगातार सम्पर्क बना रहा है और इस बात की कोशिश हो रही है और हम लोगों को उम्मीद भी है कि बहुत जल्दी ही हम इस कमी को पूरा करेंगे और रेल मंत्रालय ने आश्वासन दिया है कि शीघ्रातिशीघ्र वह पूरे वैगन देंगे।

All India Broadcasts

*210. SHRI KANWAR LAL GUPTA: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) whether it is a fact that All India Radio is not heard in U.S.A., Japan and in many other countries;

(b) if so, in how many countries people cannot hear All India Radio;

(c) what specific steps Government have taken to see that All India Radio can be heard in all the countries; and

(d) why no action has been taken by the Government so far in this direction?

THE MINISTER OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI L. K. ADVANI): (a) While the external service of All India Radio does not reach U.S.A., it is heard in Japan and many other countries. The General Overseas Services of All India Radio in English in the morning and afternoon are directed towards Japan and the East. The reception is reported to be satisfactory at least on one frequency.

(b) A.I.R. directs its external services to about 55 countries. The reception varies from time to time depending mainly on the level of interference due to crowding of short-wave bands.

(c) (i) In order to augment the external services of A.I.R. two more short-wave transmitters of 250 KW power each with additional aerial system are proposed to be installed.

(ii) In addition, a proposal to instal two Shortwave transmitters of 500 KW power each has also been approved in principle.

(iii) An Inter-Ministerial Group has been set up by Government to undertake a study and to determine

the optimal number of High Power Shortwave transmitters required for A.I.R.'s external services.

(d) Does not arise.

श्री कंवर लाल गुप्त : अभी माननीय मंत्री महोदय ने कहा है कि 55 देशों में उनकी एक्सटर्नल सर्विस योजना है, लेकिन मैं यह कह सकता हूं कि अब भी यहां से ब्रोडकास्ट होता है तो 55 में से शायद ही कभी-कभी मुश्किल से 2, 4 देशों में वह सुनाई देता है अन्यथा आल इंडिया रेडियो हिन्दुस्तान के बाहर प्रायः सुनने को मिलता ही नहीं है और जब कभी सुनने को मिलता भी है तो उसमें जो न्यूज होती है वह 80 परसेंट इंटरनेशनल न्यूज होती है और 20 परसेंट भारत के सम्बन्ध में होती है। प्रोग्राम भी अजीब होता है। तो मैं माननीय मंत्री जी से पूछना चाहता हूं कि क्या आपने कोई ऐसी स्टडी एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्ट्री के साथ मिल करके या उनसे सलाह करके की है कि जहां इंडियन्स रहते हैं उनको कम से कम भारत में क्या हो रहा है यह मालूम हो, उसके लिए उन उन देशों में आपकी सर्विसेज पहुंचे उसके लिए कोई व्यवस्था की जाय?

दूसरे, भारतवर्ष के बारे में न्यूज आए, भारत के प्रोग्राम ज्यादा उसमें हों, उस सम्बन्ध में भी क्या आप कुछ विचार करेंगे?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, मैं इस बात से सहमत हूं कि इस समय एक्सटर्नल सर्विसेज बहुत प्रभावी नहीं है। इसमें प्रभाव उत्पन्न करने के लिए दूसरा कोई तरीका नहीं है सिवाय इसके कि हमारे ट्रांसमीटर्स की संख्या बढ़ाई जाय और ट्रांसमीटर्स की स्ट्रेन्थ बढ़ाई जाय जो कि इस समय बहुत अपर्याप्त है क्योंकि शार्ट वेव के ऊपर कंजेश्चन बहुत है। मीडियम वेव पर फ्रीक्वेंसी एलोकेट होती है, रिजर्व होती है लेकिन शार्ट वेव पर रिजर्वेशन नहीं होता है जिसके परिणामस्वरूप अगर कोई पावर फुल ट्रांसमीटर उसी फ्रीक्वेंसी पर या उसके निकट आता है तो हमारी आवाज दब जाती है। उदाहरण के लिए मैं बताऊं कि हिन्दुस्तान को जब बी बी सी अपनी सर्विसेज सुनाना चाहता है तो 6 या 8 ट्रांसमीटर्स एक साथ चलते हैं। कोई उसमें से दब जाय तो दूसरा एफेक्टिव हो जाय। हमारे यहां पर साधन बहुत कम हैं। उन साधनों को बढ़ाने के लिए एक इंटर मिनिस्टिरियल टीम बनाई गई है और बहुत दिनों से कुछ स्कीम्स पेंडिंग थीं, जैसे दो हाई सौ किलोवाट के ट्रांसमीटर्स बहुत दिनों से सैंक्शन थे लेकिन काम आगे नहीं बढ़ रहा था, उस को कैबिनेट ने क्लियर किया है और आगे काम आगे बढ़ रहा है। सिद्धांततः पांच सौ किलोवाट के दो ट्रांसमीटर लगाने का भी निर्णय हो चुका है। मैं उम्मीद करता हूं कि वह सब कार्यवाही होने के बाद हम कुछ प्रभावी हो सकेंगे।

श्री कंवर लाल गुप्त : मंत्री महोदय को यह मालूम है कि चाहे बी बी सी हो या वायस आफ अमेरिका हो या वायस आफ मास्को हो, यहां तक कि पाकिस्तान भी जो हम से बहुत छोटा देश है, उस की भी आवाज हमारे रेडियो की आवाज से बहुत ज्यादा होती है और पाकिस्तान का रिसेप्शन हमसे बहुत ज्यादा क्लीयर होता है हमारे देश में भी, यानी कश्मीर में आप जायं या पंजाब में जायं और दिल्ली सुनना चाहते हैं तो पाकिस्तान ज्यादा अच्छी तरह से सुनाई देता है, दिल्ली नहीं सुनाई देता। तीस साल की आजादी के बाद भी यह हालत हमारी है तो विदेशों में इस का क्या उलटा प्रभाव पड़ेगा, आप विदेशों को भारत क्या कर चाहता है यह कैसे बताएंगे, इस सम्बन्ध में आप और क्या कार्यवाही कर रहे हैं? जो आपने किया वह तो ठीक है लेकिन इसका कितना असर होगा, यह कब अमल में आयेगा और कब आप एश्योर करायेंगे कि कम से कम नेपाल, पाकिस्तान या चाइना जो आसपास के हमारे पड़ोसी देश हैं उनके बराबर तो हमारा रिसेप्शन हो जायगा? इस बात की गारंटी आप हमें कब देंगे?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य ने जो बात पहले कही है, जो बात मैंने स्वीकार की उसी बात पर फिर से बल दिया है। मैं तो इतना ही कहना चाहूंगा कि सरकार इस कमी के प्रति सजग है और इस कमी को जल्दी से जल्दी हम खत्म कर सकें इस दिशा में कदम उठा रही है।

एक पहलू मैं और भी बता दूं कि जिसके कारण बाकी विदेशों की जो ब्राडकास्टिंग सेवाएं हैं वह दूर तक पहुंच जाती हैं, वह यह है कि उनके पास रिले स्टेशन भी हैं, रिले सेंटर्स भी हैं... (व्यवधान) . .

श्री कंवर लाल गुप्त : पाकिस्तान का बताइए।

श्री लालकृष्ण आडवाणी : पाकिस्तान तो हमारे निकट है और उन का ट्रांसमीटर ज्यादा पावरफुल है इसलिए यह होता है। हमारे यहां ज्यादा पावरफुल ट्रांसमीटर हो जाएंगे तो यह काम हो जायगा।

एक और पहलू है कि हमारे अपने लिमिटेड रिसोर्सेज हैं, उन का आप्टिमम यूटिलाइजेशन करना है। अभी जो व्यवस्था है उसका फिर से पुनरीक्षण करना पड़ेगा क्योंकि इतनी भाषाओं में बहुत ज्यादा देशों तक पहुंचने की कोशिश हम करते हैं जिसके परिणामस्वरूप जो हमारे टार्गेट एरियाज हैं उन तक भी पूरे नहीं पहुंच पाते। उन बातों पर विचार कर रहे हैं।

श्री राम विलास पासवान : माननीय मंत्री जी ने विदेशों की बात कही कि बड़े-बड़े ट्रांसमीटर्स लगाए जा रहे हैं लेकिन देश के अन्दर की स्थिति है, जैसे पटना से जो न्यूज ब्राडकास्ट होती है वह

दिल्ली में हम नहीं सुन पाते हैं, चाहे नार्मल बुलेटिन हो या इवनिंग बुलेटिन हो, तो स्पेशल के प्रोग्राम हम दिल्ली में नहीं सुन पाते हैं उसके लिए माननीय मंत्री जी क्या व्यवस्था कर रहे हैं?

श्री लाल कृष्ण आडवाणी : This pertains to external Services. हिन्दुस्तान के अन्दर हम मिडियम वेव का उपयोग करते हैं और विदेश की सर्विसेज के लिए शार्ट वेव का उपयोग कर रहे हैं। यह सवाल शार्ट वेव ट्रांसमीटर्स के लिए है।

PROF. P. G. MAVALANKAR: While appreciating what the Minister has said, specially with regard to the constraints of economy and limited funds available, may I ask him, in particular, whether he is aware of the fact that a number of smaller countries in the world, particularly, in Asian region, are having much more powerful transmitting stations than what India possesses and, if so, what is his answer to that and, in view of this, whether he will expedite giving priority in terms of not only spending more money but also having concentrated external services to those areas where Indians live in large numbers.

SHRI L. K. ADVANI: I fully appreciate the point that the hon. Member has made and it is in that context that I had mentioned earlier that there is need to utilise the limited resources in an optimum manner. At present, it is spread over so large a spectrum that the optimum utilisation is not there. I fully appreciate his point

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: May I know from the hon. Minister in the matter of installing two powerful transmitters for external services about which he said that there is a clearance from the Cabinet, what are the financial implications and whether, by installing these transmitters, any particular countries or areas have been identified so that our external services will be correlated with our relations with those countries?

SHRI L. K. ADVANI: At present, we already have two 250 KW transmitters at Aligarh. There will be two additional 250 KW transmitters. When they come into operation, these four transmitters together, apart from 500 KW transmitters we have in Delhi, will be correlated with each other and the entire target areas identified. Before the inter-ministerial group which is presently looking into the matter, one of the items is the point that the hon. Member has just made as to which of the countries should be targeted to and in what manner.

Oil Exploration Operation in Kerala, Andaman and North Bassein

*212. SHRI C. K. CHANDRAPPAN: Will the Minister of PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILIZERS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that the Chairman of the Oil and Natural Gas Commission had made a statement on board the Shipping Corporations tankers 'Jawaharlal Nehru' at Bombay High on June 8, 1978 that there are plans to undertake oil exploration in Kerala, Andaman and North Bassein near Bombay after the monsoon;

(b) whether it is also a fact that the oil exploration operation commissioned in Kerala Coast by the Union Minister on April 16, 1978 on the oil rig of the American firm off-shore International had done preliminary drilling operations to the depth of 1200 metres and then withdrawn on the outbreak of monsoon;

(c) if so, the result of this preliminary investigation;

(d) why the promise made by the ONGC Chairman as mentioned in Part (a) of this question has not been fulfilled so far; and

(e) what steps Government propose to take and when to honour the promise of the ONGC Chairman?

THE MINISTER OF PETROLEUM, CHEMICALS AND FERTILIZERS (SHRI H. N. BAHUGUNA): (a) to